शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

इलेक्ट्रानिक मीडिया मनुष्य की शारीरिक क्षमताओं का विस्तार है-प्रो० बी०के० कुठियाला

उत्तर प्रदेश शासन की उत्कृष्ट केन्द्र योजना के अन्तगर्त हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 06-07 अक्टूबर 2012 को दो दिवसीय इलेक्ट्रानिक मीडिया प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इस कार्यशाला का उद्घाटन माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल के प्रो0 रामजी त्रिपाठी की अध्यक्षता में किया गया है। प्रो0 रामजी त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया एक विशेष धारा है जिसमें अनन्त संभावनाएं हैं। इसमें कार्य करने के लिए जुनून की आवश्यकता होती है। आज अच्छे मीडिया विशेषज्ञों की आवश्यकता है जो समाचार चैनलों को सही दिशा दे सके। दिल्ली न्यूज़ एक्सप्रेस के मीडिया विशेषज्ञ श्री मुकेश कुमार ने कहा कि मीडिया जगत् में कार्य करने वाले 90 प्रतिशत मीडिया कर्मियों को अपनी भाषा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है और पत्रकारों को समाज के विशाल संवर्ग के समक्ष सही तथ्यों को प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि दूरदर्शन केन्द्र लखनऊ के पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक डॉ0 सतीश ग्रोवर ने बताया कि मीडिया कर्मियों में विशिष्ट योग्यता होनी चाहिए। साथ ही साथ पैसे से ज्यादा कार्य करने की क्षमता को अहमियत देनी चाहिए। न्यू मीडिया के आने से समाचार तो जरूर मिल रहा है लेकिन यह समुचित ज्ञान नहीं दे पा रहा है जिससे समाचरों के प्रस्तुतिकरण में व्यापक बदलाव आया है। समाचारों को लिखने में संयमित भाषा का प्रयोग करना चाहिए। हिन्दी एवं पत्रकारिता विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि इलेक्ट्रानिक मीडिया का लेखन प्रभावशाली होना चाहिए जिसका दर्शकों/श्रोताओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सके। समाचारों में सांस्कृतिक चेतना और आर्थिक पक्षों को इस तरह उजगार करना चाहिए जिससे समाज लाभान्वित हो सके। गलतियों से सीखने की आवश्यकता है घबड़ाने की नहीं। कार्यशाला में उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो0 कैलाश देवी सिंह ने कहा कि आज इलेक्ट्रानिक मीडिया का युग है। यही कारण है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया बच्चों, नौजवानों और बूढ़ों पर हावी हो रहा है। वर्तमान में रेडियो, टी0वी0, कम्प्यूटर, इंटरनेट एवं मोबाइल आदि हमारे जीवन के अंग बन गये हैं और संचार माध्यमों ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। उद्घाटन सत्र के उपरान्त प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो0 रामजी त्रिपाठी और श्री मुकेश कुमार ने इलेक्ट्रानिक मीडिया के समाचारों की लेखन प्रक्रिया संबंधी बारीकियों को प्रशिक्षुओं को बताया। द्वितीय सत्र में विद्वानों द्वारा अभिव्यक्त समाचार लेखन के सिद्धांतों को आधार बनाकर प्रायोगिक समाचार लेखन का कार्य प्रशिक्षुओं ने किया और समाचार लेखन के दौरान होने वाली त्रुटियों के संबंध में विशेषज्ञों ने बताया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रथम तकनीकी सत्र में श्रीमती उषा सक्सेना ने रेडियो नाटक लेखन की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए रेडियो को शब्दों का माध्यम और अंधों का थियेटर बताया है। रेडियो नाटक में पात्रों के आहार्य तक का परिचय शब्दों के माध्यम से दिया जाता है। दृश्य सज्जा का कार्य संगीत और ध्वनि के माध्यम से होता है। दृश्यों को जोड़ने के लिए संगीत को फेड इन और फेड ऑउट के रूप में प्रयोग किया जाता है अर्थात् रेडियो कार्यक्रमों की पहचान शब्दों से है। दीक्षा शैक्षिक दूरदर्शन राकेश निगम ने कहा कि सामाजिक मुद्दों से संबंधित डॉ0 विक्रम साराभाई ने सैटेलाइट द्वारा टी0वी0 कार्यक्रमों में विशेषकर टेलीफिल्मों को आमजन तक पहुंचाना का प्रयास किया है। ततपश्चात् दीक्षा शैक्षिक दूरदर्शन राकेश निगम द्वारा निर्मित टेलीफिल्म 'राह चुनी, बात बनी' का प्रदर्शन किया गया। इस फिल्म में शिक्षा के अधिकार के साथ ही साथ सामुदायिक

कार्यशाला-रिपोर्ट

डॉ० रश्मि गौतम
असिस्टेंट प्रो., पत्रकारिता एवं जनसंवार संस्थान, छत्रपति शाहजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

कार्यशाला-रिपोर्ट

डॉ० रश्मि गौतम
असिस्टेंट प्रो., पत्रकारिता एवं जनसंवार संस्थान, छत्रपति शाहजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सहभागिता को बहुत सरल व प्रभावी ढ़ंग से दिखाया गया। परम्परागत मीडिया को ग्रामीण जनता के लिए उपयोगी बताते हुए विकास संचार में लोगों के व्यवहारिक बदलाव सबसे बड़ा बाधक है। लखनऊ दूरदर्शन केन्द्र के निर्देशक आत्म प्रकाश मिश्र ने बताया है कि दूरदर्शन ने मीडिया का स्वरूप बदल दिया है। दूरदर्शन और आकाशवाणी लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करने के लिए आवश्यक संवाद को बखूबी निभा रहे हैं। शिशिर सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि दृश्य-श्रव्य माध्यम के लेखन का मुख्य उद्देश्य सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन है जिसमें मनोरंजन प्राथमिक पायदान है। लेकिन मनोरंजन स्वास्थ्य एवं समाज सापेक्ष होना चाहिए। ड्रामा कला ही नहीं बल्कि जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। दिल्ली के श्री निमेश कुमार ने वैज्ञानिक लेखन के क्षेत्र में अपार संभावनाओं की ओर संकेत करते हुए विषय विशेषज्ञों की कमी के संबंध में बताया ह। भारत में हिन्दी भाषा के माध्यम में लिखकर ही विज्ञान का प्रचार प्रसार व्यापक रूप से किया जा सकता है। विज्ञान लेखन में सत्य तथ्यों का प्रयोग करें न कि अंधविश्वास पूर्ण कथ्यों का। कार्यशाला के तृतीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 बी0 के0 कुठियाला ने इलेक्ट्रानिक मीडिया की बहुआयामी संभावनाओं पर विचार करते हुए बताया कि इलेक्ट्रानिक मीडिया मनुष्य प्रजाति को मनुष्य बनाने का उपक्रम करता है। प्रकृति प्रदत्त दुनिया का सम्मिश्रण करके तकनीक का विकास होता है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया मनुष्य की शारीरिक क्षमताओं का विस्तार है जैसे-दृष्टि का कैमरा, आवाज का रेडियो, स्मृति का कम्प्यूटर। वैज्ञानिकों का दिया हुआ वरदान-इलेक्ट्रानिक संसाधन हमारी मुठ्ठी में है जिसका सदुपयोग मनुष्य और मनुष्यता के विकास के लिए करना चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इलेक्ट्रानिक मीडिया का उद्देश्य सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की अवधारणा की प्रतिपूर्ति करता हो।

कार्यशाला के चतुर्थ सत्र में दिल्ली के विज्ञापन विशेषज्ञ श्री सुभाष सूद ने इलेक्ट्रानिक मीडिया के विज्ञापनों पर चर्चा करते हुए कहा कि मीडिया पर प्रसारित विज्ञापन बाजार की दृष्टि से सफल हैं किन्तु सामाजिक दृष्टि से वे अपना दायित्व नहीं निभा पा रहे हैं। विज्ञापन लिखते समय विशेषज्ञों को वर्ग, बजट, उत्पाद की गुणवत्ता, उत्पादक की लाभ-हानि पर विचार करने के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों पर भी ध्यान देना चाहिए जिससे विज्ञापन अपना प्रभाव छोड़ सके। सभी जनमाध्यमों पर एक साथ प्रयोग करके विज्ञापन देना चाहिए जिससे बाजारवाद को बढ़ावा मिल सके साथ ही साथ उनकी खूबियों और खामियों को धयान में रखकर अपने ब्राण्ड का विज्ञापन देना चाहिए ताकि विशाल उपभोक्ता वर्ग लाभांवित हो सके। जनमाध्यमों का सही चुनाव करके ब्राण्ड को विज्ञापनों के द्वारा लक्षित उपभोक्ताओं तक पहुंचाना ही विज्ञापनदाता की कला है सेल्युलर फोन ब्राण्ड के लिए सबसे सशक्त माध्यम है क्योंकि सेल्युलर फोन लोगों के सबसे ज्यादा पहुंच में रहता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में भविष्य में जनसंचार का सबसे सस्ता एवं सशक्त माध्यम रेडियो बताया है। टी0वी0 पर प्रसारित विज्ञापन मनोरंजन एवं जानकारी देता है बाध्य नहीं करता है जबकि अन्य जनमाध्यम बाध्य भी करते है। इन्टरनेट माध्यम से प्रभावित होने के साथ-साथ लोगों ने सोशल मीडिया नेटवर्किंग पर विज्ञापन देना प्रारम्भ कर दिया है लेकिन भाषा और सोच का तालमेल न होने के कारण विज्ञापन का उपभोग नहीं हो पाता है। लेकिन इन्टरनेट पर विज्ञापनों की भाषा का प्रयोग उपभोक्ता के रिझाने के लिए नये ढ़ंग से सोचना चाहिए।

कार्यशाला के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो0 बो0के0 कुठियाला ने की। प्रो0 रामजी त्रिपाठी तथा ए0बी0पी0 न्यूज के स्थानीय संपादक पंकज झा और इंडिया न्यूज़ के ब्यूरो प्रमुख श्रेय शुक्ला, मुकेश कुमार आदि विशिष्ट विशेषज्ञ उपस्थित हुए। पंकज झा ने कहा कि मीडिया में जगह बनाने के लिए भाषा का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक ह साथ ही साथ शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इंडिया न्यूज़ के ब्यूरो प्रमुख श्रेय शुक्ला ने बताया है कि मीडिया के लिए समय की पाबन्दी अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि वक्त की नज़ाकत और समय सीमा ही किसी भी कार्यक्रम को सफल बनाती है। डॉ0 श्रुति और कार्यशाला क संयोजक डॉ0 रमेशचन्द्र त्रिपाठी ने कार्यशाला का संचालन किया और डॉ0 पवन अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन। इस कार्यशाला में लखनऊ के अतिरिक्त आस-पास के जिलों से भी संस्थानों ने सहभागिता की है जिसमें महाराणा प्रताप इंस्टीटयूट से डॉ0 इन्द्रेश मिश्रा, डॉ0 मनोज कुमार एवं देश दीपक, जहांगीराबाद इंस्टीटयूट बाराबंकी से मो0 जुबैर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग लखनऊ से डॉ0 मुकुल श्रीवास्तव, पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान,

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

कार्यशाला-रिपोर्ट

डॉ० रश्मि गौतम
असिस्टेंट प्रो., पत्रकारिता एवं जनसंवार संस्थान, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
(उत्तर प्रदेश)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सी0एस0जे0एम0 कानपुर से डॉ0 रश्मि गौतम। इसमें 10 संस्थानों के लगभग 150 छात्र-छात्राओं ने सहभागिता को है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN